हनुमान जी से मैनेजमेन्ट सीखे

संलग्नकर्ता
डा. संजय बियानी
कर्नल एम.एस.बीका

सफलता के सूत्र : श्री हनुमान जी के चरित्र से

परिचय

1. पूजा के अधिकांश मंदिर केवल दो चरित्रों के ही बने हैं – श्रीराम के और हनुमान जी के। चूँकि सीताजी श्रीराम की पत्नी थी, इसलिए उनके साथ मंदिर में सीताजी भी हैं। अन्यथा दुर्गा और काली माँ जैसे स्वतंत्र मंदिर सीताजी के नहीं हैं। लक्ष्मणजी को भी कहीं–कहीं मंदिरों में स्थान मिला, क्योंकि वे श्रीराम के साथ वन गए थे। हमें यहां यह सोचना चाहिए कि क्या कारण है कि ‘‘रामचरितमानस’’ में इतने सारे लोगों के होते हुए भी केवल हनुमानजी के ही मंदिर बने और उन्हें स्वतंत्र रूप से इतने बड़े भगवान का दर्ज़ा दिया गया। आइए श्री हनुमान चरित्र के उन पहलुओं का विचार करें जो आज भी हमें सफलता की प्रेरणा और संदेश देते हैं।

वास्तविकता की स्वीकारोक्ति आत्मविश्वास का आधार

2. हनुमानजी में कहीं भी अपनी वास्तविकता को छिपाने का प्रयास नहीं मिलता। उन्हें जहाँ भी मौक़ा मिलता है या वे जहाँ भी ज़रूरी समझते हैं, अपने इस वानरपन की खुलेआम घोषणा करते हैं।

खायऊँ फल प्रभु लागी भूखा। कपि सुभाव ते तोरेऊँ रूखा।।

हे महाराज, मुझे भूख लगी थी, इसलिए मैंने फल खाए। चूँकि मैं वानर हूँ और वानर का स्वभाव ही पेड़ों को तोड़ना होता है, इसीलिए मैंने आपका बाग उजाड़ा। इसके बावजूद वहां वे खुद को विनम्रता के साथ महज़ एक छोटे–से वानर के रूप में घोषित कर रहे हैं। यहीं हमें यह बात देखनी है कि जब व्यक्ति वास्तविकता को स्वीकार करके उससे मुक्ति पाने के लिए कुछ कर

ने लगता है, तो उसके अंदर शक्ति की ज्वालाएँ फूटने लगती हैं। **यही स्वीकारोक्ति आत्मविश्वास का आधार बन जाती है, आत्मशक्ति का कारण बन जाती है।** यह पलायन कराने वाली कमज़ोरी नहीं रह जाती।

3. यदि कोई रावण की तरह स्वयं को दुनिया का श्रेष्ठ ज्ञानी समझने लगे तो ज़ाहिर है कि उसे ओर ज़्यादा जानने की ज़रूरत ही नहीं रहेगी। जहाँ विकास रुकता है, वहीं से विनाश की शुरूआत हो जाती है, यह प्रकृति का नियम है। जैसे ही फल पक जाता है, वह बढ़ना छोड़कर गलना शुरू कर देता है। इसलिए श्रेष्ठता की भावना से ग्रसित व्यक्ति आगे कुछ नहीं कर पाते और जो कुछ भी उनके हाथ में होता है, वह भी धीरे–धीरे खोने लगता है। जबकि अपनी कमज़ोरियों से वाकिफ़ व्यक्ति, ज़रा भी संवेदनशील है, थोड़ा भी जागरूक और समझदार है, तो वह इससे मुक्ति पाने के लिए अंदर ही अंदर बुरी तरह से छटपटाता रहता है। उसकी यही छटपटाहट, उसकी यही बेचैनी उसको कुछ न कुछ करने के लिए प्रेरित करती है। बात बहुत साफ़ है कि जब वह कर्म करने को आगे आता है तो कर्म करते–करते कहीं का कहीं पहुँच जाता है। ऐसे ही लोग ज़िंदगी में कुछ पाकर जाते हैं।

अपनी शक्तियों का अहसास करें (Know Your Strength)

4. मन 'कनवर्टर' होता है। बाहर की चीज़ों को अंदर किस रूप में भेजा जाए, यह काम हमारा यह मन ही करता है। इसीलिए किसी भी काम में कोई किस सीमा तक सफल हो पाएगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस काम के साथ उसके मन का तालमेल कितना बैठ पा रहा है। जाम्बवंत द्वारा हनुमानजी को कराया गया उनकी शक्ति का एहसास इसका उदाहरण है। दूसरे वानरों की तरह हनुमानजी भी चुपचाप बैठे हुए थे। उन्हें अपनी दिव्य शक्ति का आभास नहीं था क्योंकि उनका स्वभाव राम भक्ति में मगन रहना ही था। जामवंत उन्हें याद दिलाते हैं कि तुम चूँकि पवनपुत्र हो, इसलिए तुम्हारे पास वायु जैसी शक्ति है। तुम्हारे पास बुद्धि है, विवेक है और सबसे बड़ी बात यह कि विज्ञान भी है। जिसके पास भी इनका ख़ज़ाना हो, भला उसके लिए दुनिया का कौन–सा काम कठिन हो सकता है?

5. जिन आंतरिक गुणों की ज़रूरत होती है, वे सब हनुमान के पास हैं। हमने देखा कि उनके पास बुद्धि है, विवेक है ओर विज्ञान भी है। कार्य की आवश्यकता–बुद्धि जाग्रत, सकारात्मक या नकारात्मक, विवेक जाग्रत, कार्य किस तरह किया जाए कि असफल न हो यह विज्ञान है।

जिसके पास ये तीनों होंगे, स्वाभाविक रूप से ही वह बहुत संतुलित हो जाएगा, बहुत ही व्यावहारिक और बहुत ही धैर्यवान होकर चट्टान की तरह स्थित हो जाएगा। ऐसे चट्टानी मन वाले व्यक्ति ही ज़िंदगी में करिश्मे करते हैं।

काम के प्रति श्रद्धा (Work is Worship)

6. जिसके प्रति आदर की भावना पैदा हो जाती है, कभी–कभी हम उसमें भी मीन–मेख निकालने लगते हैं। लेकिन जिसके प्रति श्रद्धा की भावना पैदा हो जाती है, तो मीन–मेख निकालने की कोई गुंजाइश नहीं रहती। सामान्यतः यह श्रद्धा व्यक्तियों के प्रति होती है। कल्पना करके देखिए कि यदि यही श्रद्धा अपने काम के प्रति हो जाए तो फिर क्या होगा। सामान्यतः अभी तक आपने यही पढ़ा होगा कि अपने काम से प्रेम करो। हनुमान जी का चरित्र सिखाता है कि अपने काम के प्रति श्रद्धा का भाव पैदा करो। इसलिए तो जब भी कोई कठिन काम होता था, वे हमेशा रघुनाथ को ही अपने ह्रदय में बसाकर चलते थे क्योंकि सम्पूर्ण समर्पित व्यक्ति ही सम्पूर्ण ऊर्जा का अधिकारी होता है।

ज्ञान और गुण की महत्ता

7. हनुमानजी के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उनका शक्तिमान होना ही नहीं बल्कि उनका ज्ञान के साथ–साथ गुण का भी सागर होना है। ज्ञान तो एक प्रकार से आग की तरह है। आप इस आग से आरती की बत्ती जला सकते हैं, चूल्हे की लकड़ियां जला सकते हैं और यदि चाहें तो किसी का घर भी जला सकते हैं। हनुमान भी असफल हो जाते, यदि वे केवल ज्ञान के ही सागर होते तो। लेकिन वे कभी असफल नहीं हुए। वे कहीं भी असफल नहीं हुए, क्योंकि वे ज्ञान के साथ–साथ गुणों के भी सागर थे। गुण का अर्थ उस चरित्र से है, उस प्रवृत्ति से है, जिसके आधार पर कोई भी अपने इस ज्ञान का उपयोग करता है और ज्ञान को विज्ञान में परिवर्तित कर देता है।

‘इमोशनल इंटेलीजेंस : व्हाय इट कैन मैटर मोर दैन आईक्यू।’

व्यक्ति का अपने अनुभवों को समझना, उन पर नियंत्रण रखना और अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उनका सर्वोत्तम उपयोग करना एवं जिज्ञासा को निरंतर बनाये रखना।

भावनात्मक संतुलन की आवश्यकता

8. हनुमानजी के सामने अत्यंत भावुक होने का सबसे पहला और ज़बर्दस्त प्रसंग तब आया था, जब वे अशोक वाटिका में सीताजी को पहली बार देखते हैं। हम मान सकते हैं कि सीताजी का यह करुण दृश्य हनुमान के सीने में तीर की तरह बिंध गया होगा। जब सीताजी नहीं मानतीं, तब रावण सीता को मारने तक दौड़ता है। लेकिन वे हनुमानजी, जो सीताजी का पता लगाने आए हैं, जो राम के प्रति इतने एकनिष्ठ हैं, चुपचाप बैठे रहते हैं। उद्वेलित होने से रही–सही बात भी बिगड़ जाएगी। इसी प्रकार उनकी आँखों के सामने यदि लक्ष्मण के मूर्च्छित शरीर की तस्वीर है, तो रोते हुए श्रीराम का दृश्य भी है। किसी भी महान् और शक्तिशाली व्यक्ति की डबडबाई आँखों में बाढ़ में भी अधिक प्रलयंकारी शक्ति होती है। हनुमान ने श्रीराम की उन डबडबाई आँखों को देखा है। इसके बावजूद वे विचलित नहीं हुए। कड़ी मेहनत से व्यक्ति की ऊर्जा की बर्बाद नहीं होती, भावनात्मक असंतुलन से होती है।

कार्य ही सफलता का पुरस्कार है

9. यदि आपको कोई काम सौंपा जा रहा है, तो उसका साफ़ मतलब है कि आपको उसके लायक समझा जा रहा है और आप यह काम कर सकते हैं। यह अप्रत्यक्ष रूप से आपकी योग्यता और क्षमता का सच्चा और सुन्दर प्रमाण–पत्र है। दूसरे शब्दों में काम आपकी योग्यता का पुरस्कार ही है। श्री हनुमान जी की प्रतिभा को भी समझकर ही उन्हें समय–समय पर ऐसे कार्य सौंपे गये थे जो सिर्फ वही कर सकते थे। ‘‘उनकी प्रगति में न भाग्य का लेख है और न किसी के अनुग्रह का। उपलब्ध सफलताओं का सारा रहस्य सिर्फ़ एक ही बात में भरा हुआ है कि उन्होंने प्रतिभा और तत्परता को निखारने का भरपूर प्रयास किया और किसी भी स्थिति में संतुलन नहीं खोया।’’ सच्चा टैलेंट ऐसे

लोगों में आता है, जिसमें चरित्र की निर्मलता के साथ ही साथ उद्देश्य की निष्ठा भी हो।

'डिप्लोमेसी' और 'साईकोथैरेपी'

10. डिप्लोमेसी की शुरुआत श्री हनुमान जी ने अशोक वाटिका के फल खाने की अनुमति माँगने से की। उन्होंने नारी के मातृत्व भाव की कमज़ोर नस को पकड़ा। एक तो यह कि कोई भी नारी यदि सबसे ज़्यादा कमज़ोर किसी के सामने पड़ती है, तो अपनी संतान के सामने। फिर यदि वह संतान भूखी हो, और खाने को कुछ माँगे तो इन्कार की गुंजाइश नहीं होती है।

11. फिर उन्होंने 'साईकोथेरेपी' का रास्ता अपनाया। पूरा बाग उजाड़ा और बाद में लंका दहन करके हनुमान जी ने एक प्रकार से लंकावासियों के सामने श्रीराम की शक्ति का एक 'ट्रेलर' पेश करके 'मनौवैज्ञानिक लड़ाई' की शुरुआत कर दी।

कर्म ही सुंदर है

12. सुंदरकांड इसलिए है, क्योंकि इस कांड में हनुमानजी मौजूद है। हनुमान यानी कि कर्म के अवतार। जहाँ कर्म हो, और वह भी शुभ कर्म, तो उसकी सारी की सारी प्रक्रियाएँ तो अपने आप ही सुंदर हो जाएँगी। फिर जिनके कर्म सुंदर होंगे, वे इस संसार में सफलता को प्राप्त करके तर ही जाएँगे। तो ज़रूरत सुंदरकांड का पाठ करने की नहीं, बल्कि उससे पाठ ग्रहण करके उसका अनुसरण करने की है। व्यक्ति सुंदर नहीं होता। उसके कर्म उसे सुंदर और असुंदर बनाते हैं।

13. ऐसा सत्य, जो कल्याणकारी हैं, सुंदर होता है – सत्यम् शिवम् सुंदरम्। लक्ष्य का बड़ा होना ही पर्याप्त नहीं है। लक्ष्य के सत्यपरक होना भी सब कुछ नहीं है। एक बड़े सत्य में भी यदि लोगों का हित करने की ताक़त नहीं है, तो वह सुंदर नहीं हो सकता। तो सुंदरता के संदर्भ में बात बड़े या छोटे होने की नहीं होती। बात होती है, उसके कल्याणकारी होने की। बात यह होती है कि आप जो काम करने जा रहे हैं, उससे कितने लोगों का हित होगा। सत्य पर अडिग रहने का

अहंकार व्यर्थ है, यदि वह सत्य उपयोगी नहीं है तो। यह एक प्रकार से रेगिस्तान में धान बोने जैसा निरर्थक है। यह एक 'बांझ श्रम' है।

अधिकतम लोगों का हित आपके आत्मविश्वास का आधार

14. किसी भी काम की श्रेष्ठता की परख दो आधारों पर की जा सकती है। पहला यह कि उस काम से उसी का फ़ायदा हो रहा है या लोगों का। दूसरा यह कि यदि लोगों का हो रहा है, तो फिर वह कितने लोगों का हो रहा है, कैसे लोगों का हो रहा है और किस प्रकार का हो रहा है। हनुमान जी के चरित्र का यही गुण तो उनकी सबसे बड़ी ताक़त और आत्मविश्वास का सबसे बड़ा आधार है। जहाँ हम अपने बारे में सोचना शुरू कर देते हैं, वहीं हम कमज़ोर पड़ जाते हैं। हमारी ताक़त ख़त्म होने लगती है।

पवित्र चेतना और प्रबल प्रयास ही सफलता की कुंजी

15. हनुमान जी अपनी पवित्रता और प्रबलता के दम पर वे अपने प्रयासों में प्रकृति का भी बिन माँगा सहयोग पा लेते हैं। जैसे ही वे लंका दहन करने के लिए उड़ान भरते हैं, वैसे ही – ‘‘हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास।’’ उनचास प्रकार की हवाएँ चलने लगती हैं, ताकि लंका का दहन अच्छी तरह से हो सके। प्रकृति हमेशा हमसे बात करती है। वह हमारी माँ है, और इससे पहले कि उसके पुत्रों के साथ कुछ अशुभ घटे, वह अपने ढंग से उसकी पूर्व चेतावनी दे देती है। प्रखर ज्ञानवान एवं अत्यंत सतर्क हनुमान एक सपने में छिपे प्रकृति के संदेश को तुरंत भाँप गए। रावण के कहते ही हनुमान को त्रिजटा का स्वप्न याद आ गया और वे मुसकरा उठे कि वह सपना सपना न होकर एक संदेश था – प्रभु का संदेश, प्रकृति का संदेश, शुद्ध चेतना का संदेश या किसी पवित्र आत्मा के द्वारा भेजा गया संदेश।

16. जिसकी चेतना जितनी अधिक प्रखर, उद्देश्य जितने अधिक स्पष्ट, आत्मा जितनी अधिक पवित्र और भावना जितनी अधिक समर्पित होगी, प्रकृति के ऐसे संदेशों की बौछारें उसके जीवन की झोली में उतनी अधिक होगी। हनुमानजी ऐसे ही थे। लेकिन इससे पहले कि प्रकृति हमारा साथ दे, हमें संदेश दे, वह पहले हमारी अच्छी तरह से परीक्षा लेती है, कई प्रकार की बाधाएँ खड़ी करके। जब हम इस परीक्षा में

सफल हो जाते हैं, जैसा कि हनुमानजी होते हैं, तब वह हमारे साथ हो लेती है। हो सकता है कि हमें उसकी इस मदद का एहसास न हो, और यह भी हो सकता है कि इतनी मदद के बावजूद हम कामयब भी न हों। लेकिन यह नहीं हो सकता कि वे प्रयास बेकार चले जाएँ।

आत्मशक्ति का महत्व

17. आत्मा की ताकत या मस्तिष्क की ताक़त कह लें, जो किसी भी आदमी को कठिन से कठिन घड़ी तथा पराजय के क्षणों तक में टूटने से, झुकने से बचाए रखती है, सँभाले रखती है। उद्देश्य की यही पावनता और एकनिष्ठता नेलसन मैण्डेला को उन्तीस वर्षों तक जेल के सीखचों के पीछे अकंपित लौ की तरह जलाए रखती है और सरदार भगत सिंह को ज़िंदगी के लिए माफ़ीनामा माँगने से इंकार करवाते हुए हँसते–हँसते फाँसी के फंदे पर झूल जाने को तैयार कर देती है। सच यही है कि हमें कोई दूसरा कमज़ोर नहीं करता। हमें कोई दूसरा कमज़ोर कर ही नहीं सकता, बशर्ते कि हम स्वयं कमज़ोर होना न चाहें। हम ख़ुद ही ख़ुद के लिए परिस्थतियों एवं विचारों का एक ऐसा मकड़जाल बुनते चले जाते हैं कि वह मकड़जाल ही हमारे लिए सब कुछ बन जाता है। आत्मशक्ति का अवलंवन विश्वसनीय है।

जितनी अधिक और कठिन बाधाएं उतनी ही बड़ी सफलता

18. हनुमान जी सीता का पता लगाने का बीड़ा उठाकर जैसे ही आसमान में उड़ना शुरू करते हैं, सफलता का प्राकृतिक नियम अपना काम करना शुरू कर देता है। सफलता का प्राकृतिक नियम यह है कि जिस सफलता की राह में जितनी अधिक और जितनी कठिन बाधाएँ होंगी, वह सफलता उतनी ही बड़ी होगी। यह विज्ञान का ही नियम है कि धनात्मक और ऋणात्मक शक्तियाँ मिलकर ही इस प्रकृति का संचालन कर रही हैं। स्त्री और पुरूष ये दो भिन्न भाव हैं। सीधी सी बात है कि यदि एक ही तत्व हो, तो फिर उस तत्व का और विस्तार तब तक संभव नहीं होगा, जब तक कोई दूसरा तत्व उसमें शामिल न किया जाए। यह दूसरा तत्व पहले तत्व का जितना अधिक विरोधी होगा, उसके शामिल किए जाने से बने हुए तत्व में उतनी ही अधिक शक्ति होगी, प्रचंडता होगी। अन्यथा जो कुछ जैसा भी है, वैसा ही चलता रहेगा। हम किसी भी प्रकार के नए की उम्मीद नहीं कर सकते। संघर्ष हम अपनी परिस्थितियों से करते हैं, अपने आपसे करते हैं और प्रकृति से करते हैं। जबकि हमारा विरोध करने वाला एक जीता–जागता इंसान होता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हारने वाले की इस

तात्कालिक हार में कहीं न कहीं भविष्य की जीत के बीज छिपे रहते हैं, क्योंकि इस विरोध ने उसे ऐसे विरोध से निपटने के लिए पहले से कहीं अधिक मज़बूत तो बना ही दिया है।

कृतज्ञता का भाव सहयोग की सीमाओं का विस्तार करता है

19. मैनाक पर्वत समुद्र से निकला, ताकि हनुमान जी अपनी थकान थोड़ी दूर कर लें। क्या हनुमान ने ऐसा किया? आपको पता है कि उन्होंने क्या किया होगा। आप यह भी जानते हैं कि उनकी जगह यदि हम में से कोई भी होता, तो वह क्या करता। उनके पास वक़्त बहुत कम था। ऐसी स्थिति में यदि वे चाहते तो मैनाक की उपेक्षा करके आगे बढ़ लेते। लेकिन हनुमान जी ऐसा नहीं करते। आगे तो बढ़ना ही है, लेकिन उपेक्षा करके नहीं, बल्कि उचित सम्मान देते हुए, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए। प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से न जाने कितनों का योगदान रहता है। इन सभी जाने–अनजाने सहयोगियों और शुभचिंतकों के प्रति हम अपनी कृतज्ञता व्यक्त करके एक प्रकार से उनके द्वारा चढ़ाए गए कर्ज़ की क़िस्तें चुकाते हैं। कृतज्ञता के प्रदर्शन से हमारा मन हल्का होकर ऊपर, क्रमशः और ऊपर उड़ने लगता है। इससे मन के विकार कम होते हैं, जिससे वह लगातार मज़बूत होता जाता है। साथ ही सामने वाले के मन से भी हमारे लिए शुभ की किरणें निकलकर हमारे रास्ते को रोशन करती हैं। इससे एक प्रकार से दूसरों की ताक़त को हम अपनी ताक़त बना लेते हैं। कृतज्ञता का भाव हमारे मन को पवित्र बनाता है और हमारे लिए सहयोग की सीमाओं का विस्तार करता है।

कार्यान्तर ही विश्राम

20. जब हम जल्दबाज़ी में होते हैं, तो काम करने के हमारे मुख्यतः दो तरीक़े हो सकते हैं। पहला यह कि हम छोटे–मोटे कामों को छोड़कर ज़रूरी काम में लग जाएँ। दूसरा तरीक़ा यह कि छोटे–मोटे कामों को भी यथोचित तरीक़े से करते हुए मुख्य काम को करते रहें। छोटे–छोटे कामों में जो समय लगता है, उसकी भरपाई करने के लिए या तो अपने आराम के समय में कटौती कर दें, या फिर काम करने की अपनी गति बढ़ा दें। हनुमान जी दूसरा तरीक़ा अपनाते हैं। वे छोटे–छोटे दायित्वों को भी बखूबी निभाते हुए अपने मुख्य काम को अंजाम देते हैं और अपने समय की इस भरपाई के लिए वे अपने विश्राम के क्षणों में कटौती करते हैं। इसीलिए तो वे मैनाक पर्वत का

समुचित रूप से सम्मान करने के बाद कहते हैं : **राम काजु कीन्हे बिना मोंहि कहाँ विश्राम।**

21. उनके लिए सारे काम अपने ही काम है, बावजूद इसके कि उनका अपना काम कुछ भी नहीं है, तनिक भी नहीं। जिसका अपना घर–बार ही न हो, उसका अपना काम भी भला क्या होगा? हर काम को यह समझना कि 'ये सब मेरे ही काम हैं,' हमारी काम करने की पूरी पद्धति को बदल देता है। आप यहाँ यह न समझें कि हनुमान को विश्राम की ज़रूरत ही नहीं थी। थी, लेकिन हम लोगों की तरह थोड़ी–थोड़ी देर में नहीं। एक काम को निपटा लेने के बाद होती थी। हनुमान ने सुंदरकांड में विश्राम किया है, लेकिन लंका को जलाने के बाद। लंका को भस्म करने के बाद जब वे अपनी पूँछ को बुझाने के लिए समुद्र में कूदते हैं, तब वहाँ थोड़ा सा विश्राम भी कर लेते हैं।

22. वैसे थकना भी अलग–अलग तरह का होता है। कुछ लोग बिना कुछ किए ही थक जाते हैं। ये लोग हमेशा थके हुए ही रहते हैं। जबकि कुछ लोग कितना कुछ करने के बाद भी नहीं थकते। हनुमान की स्थिति लगातार खेल में मग्न रहने वाले बालक की स्थिति है। उन्होंने अपने काम को ही खेल बना लिया है। ईसा मसीह ऐसे ही थे। एंडीसन, आंस्टीन, हेलन केलर और गाँधीजी भी ऐसे ही थे। स्टीफ़न हॉकिंग, नारायणमूर्ति भी ऐसे ही हैं। हमें अपने बारे में सोचना चाहिए कि हम कैसे हैं।

जो हमारे विरोध में नहीं वे हमारे साथ हैं

23. हनुमानजी का सिद्धान्त यह है कि जो हमारे विरोध में नहीं है, वह हमारे साथ है। जो तटस्थ है, वह कहीं न कहीं अप्रत्यक्ष रूप से हमारी मदद ही करता है। सबसे बड़ी मदद तो यह है कि वह विरोध में खड़ा होकर हमारे लिए अवरोध नहीं बन रहा है। वह हमारी विरोधी शक्तियों को ओर ताक़तवर नहीं बना रहा है। फिर हम यह जान ही नहीं सकते, अंदाज़ा ही नहीं लगा सकते कि उसकी तटस्थता किन–किन रूपों में हमारी प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर रही है।

24. रास्ते के बीच में गड़ा या पड़ा पत्थर हमें बाधा के रूप में दिखाई देता है। हम उसे हटा देते हैं। लेकिन रास्ते के किनारे पर गड़े पत्थरों पर हम कभी ग़ौर नहीं फ़रमाते। आप ध्यान दें, तो पाएँगे कि जिन रास्तों के दोनों किनारों पर पत्थर गड़े होते हैं, उन रास्तों के बीचों–बीच पत्थर पड़े हुए नहीं मिलते, क्योंकि किनारे गड़े हुए पत्थर उन्हें वहीं रोक देते हैं। उन्हें रास्ते पर आने ही नहीं देते हैं।

25. इस सम्पूर्ण ब्रह्मांड में हर क्षण, हर पल रचनात्मक शक्तियों की शुभ तरंगे यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ तैरती रहती हैं। ये तरंगे हमारे लिए होती हैं। ये तरंगे हमारी मदद करना चाहती हैं। ये व्याकुल रहती हैं कि ‘‘किसी की मदद करें।’’ ये तरंगें उनके साथ जुड़ जाती हैं, जो अपनी फ्रीक्वेंसी को उनके अनुकूल बना लेता है। हम सभी असंख्य स्टेशनों वाले रेडियो की तरह हैं, जो स्टेशन लगा देते हैं, हमारी ज़िंदगी में वैसे ही सुर और धुनें गूँजने लगती है। इसलिए हमें हनुमानजी की तरह इस विलक्षण, दयामयी और सहयोगिनी प्रकृति के प्रति हर पल कृतज्ञ होकर अपनी ताक़त में लगातार इज़ाफ़ा करते रहना चाहिए। सचमुच कितना खूबसूरत, कितना उपयोगी और साथ ही कितना सरल सिद्धान्त है कि ‘‘जो हमारे विरोध में नहीं है, वह हमारे साथ है।’’

धर्म और शुभ कार्य

26. श्री कृष्ण उम्र में अर्जुन से लगभग सवा चार साल बड़े भी थे। इसके बावजूद उन्हें अर्जुन का रथ चलाने में लज्जा नहीं आई। सारथी को योद्धा के चरणों के पास नीचे बैठना पड़ता था और योद्धा अपने पैर के अँगूठे को सारथी की कमर के कचोटकर यह बताता था कि रथ को किस दिशा में मोड़ना है। तो ये सब श्रीकृष्ण ने बर्दाश्त किया। क्यों ? इसलिए, क्योंकि वे धर्म का साथ दे रहे थे। हनुमानजी को भी बँधने में कोई ऐतराज़ नहीं, क्योंकि वे भी धर्म का साथ दे रहे हैं और आपको भी काम करने में कोई लज्जा नहीं आनी चाहिए, बशर्ते आप एक शुभ काम कर रहे हों।

27. हम कोई भी काम करें, तो उसे हमेशा इस तरह से करें कि उसके करने के तरीके से किसी की भी न तो महिमा मिटे और न ही

उसकी गरिमा को चोट पहुँचे। यह बात हमारी सोच का एक ऐसा अभिन्न अंग बन जानी चाहिए कि उसके लिए अलग से कुछ करने और सोचने की ज़रूरत ही न रह जाए।

दूरदर्शिता

28. हनुमान जी के निर्णय न तो स्वार्थ से प्रेरित होते थे और न ही निहायत तात्कालिक लाभ से। वे दूरदर्शी थे। उनकी इस दूरदर्शिता का आधार था – घटनाओं के प्राकृतिक सिद्धान्त की उनकी समझ। ब्रह्मस्त्र में बँधने का पहला फ़ायदा तो उन्हें यह मिला कि उनका तत्काल प्रमोशन हो गया, बिना किसी के दिए ही।

29. हमने जो कुछ भी किया है, अच्छा या बुरा, छोटा या बड़ा, वह एक बीज की तरह इस ब्रह्माण्ड में मौजूद रहता है। हम भले ही उसे करके भूल जाएँ, लेकिन प्रकृति उसे याद रखती है। आम को चूसकर मैं उसकी गुठलियाँ यूँ ही अपने घर के पिछवाड़े फेंक दिया करता था। मैं भूल चुका था इन गुठलियों को, लेकिन ज़मीन तो नहीं भूली थी। बरसात आई नहीं कि झुंड के झुंड आम के नन्हे–नन्हे पौधे वहाँ आपस में गुत्थमगुत्था करने लगे।

अच्छा करोगे तो अच्छा ही होगा

30. हमारे पूर्वज कार्य और कारण के इस प्राकृतिक सिद्धान्त पर पूरी गहराई के साथ विश्वास करते थे। उन्होंने अपनी इसी वैज्ञानिक समझ और अनुभव को इस खूबसूरत तथा अत्यंत प्रचलित मुहावरे में कहा – ‘‘जैसी करनी, वैसी भरनी।’’ यह भी कहा गया है ‘‘बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से होय?’’ सच बात है कि बबूल का पेड़ लगाने पर तो उसमें काँटे ही होंगे। आम के फल भला कैसे लग सकते हैं? हनुमानजी इसी को थोड़े अलग ढंग से लागू करते हैं। उनका ढंग यह है कि ‘‘आम का पौधा लगाओ और विश्वास रखो कि उसमें आम ही लगेंगे। काँटे कभी नहीं लगेंगे।’’ ‘बुरा करोगे तो बुरा होगा,’ के स्थान पर उनका मानना था कि ‘‘अच्छा करोगे, तो विश्वास रखो कि अच्छा ही होगा।’’ इसी के अनुसार हनुमान लगातार अच्छा करते चले जाते हैं और बदले में उनके साथ लगातार अच्छा ही होता चला जाता है।

अध्यात्म की समीक्षा

31. अध्यात्म एक बहुत ही सरल, सहज और सीधा–सादा तत्व है। अध्यात्म का शाब्दिक अर्थ है – आत्मा का उत्थान, आत्मा को ऊपर उठाना। यह 'अधि' और 'आत्म' नामक दो अलग–अलग शब्दों को जोड़ने से बना है। 'अधि' एक उपसर्ग है, जिसका अर्थ होता है – ऊपर। जब आत्मा संकीर्णता के धरातल के ऊपर की ओर उठने लगे, तब समझ लीजिए कि अध्यात्म की मंज़िल की यात्रा शुरू हो गई है। जब आत्मा इतनी ऊपर उठ जाए तो हमारी आँखें केवल खुद को तथा केवल अपने परिवार वालों को न देखकर पूरी दुनिया वालों को देखने लगें, तब जान लीजिए कि आप अध्यात्म की किसी सीढ़ी तक तो पहुँच ही गए हैं। वैसे भी आप जानते ही हैं कि आप धरती से जितने भी अधिक ऊँचे उठते जाएँगे, धरती का उतना ही बड़ा भाग आपकी निगाहों में सिमटता चला जाएगा।

32. आध्यात्मिकता को एक आंतरिक स्थिरता के रूप में परिभाषित करें। हमारी आध्यात्मिकता का सारा रहस्य और पैमाना केवल इस बात में है कि हम अंदर से स्थित कितने हैं या कि ठीक इसके विपरीत हम अंदर से जितने अधिक विचलित, अस्थिर और विखंडित, उलझावों और दुविधाओं से भरे हुए होंगे, आध्यात्मिकता हमसे उतनी ही अधिक दूर होगी। आप स्वयं सोचकर देखें कि वानर जाति अपने आप में कितनी चंचल होती है। इसके बावजूद हनुमान कितने अधिक स्थित, स्पष्ट और निर्द्वंद्व हैं।

33. हम सब शुरू में तो बीज के रूप में ही रहते हैं। यानि कि हमारा मूल स्वरूप तो बीज का ही है। वह तो बाद में जब पत्तों, डालियों और फूलों में बदल जाता है, तो बीज का पता ही नहीं चलता। यहाँ तक कि यदि उस पेड़ के लिए कहा जाए कि 'वह बीज है,' तो लोग कहने वाले को पागल कहेंगे। अब सब कुछ बदल गया है। बीज पहचाना ही नहीं जा रहा है। लेकिन डाली, फूल और पत्तों का यह जितना भी तमाशा है, वह है तो आख़िर में उस पूर्व के बीज को फिर से पाने के लिए ही। यानि कि इस पेड़ का जो इतना लम्बा सफ़र है, आश्चर्य है कि यह उसी स्थान पर पहुँचने का सफ़र है, जहाँ से वह

चला था। यही तो है जीवन का चक्र। यही तो है अपने बीज को फिर से पा लेना, अपने मूल को पा लेना, अपने सत्व तक पहुँच जाना और खुद को पा लेना ही तो है आध्यात्मिकता। शाश्वत सृष्टि चक्र, जो हमारे अंतिम गंतव्य याद दिलाता है।

34. तो देखा आपने एक बीज की उस ताक़त को, कि वह अपना कितने गुना विस्तार कर सकता है। यही शक्ति है आध्यात्मिकता की। यही है हमारी छिपी हुई शक्ति, या कह लीजिए कि 'अज्ञात क्षेत्र की शक्तियाँ।' इसी अज्ञात क्षेत्र की शक्तियों पर ही तो विश्वास करके स्वामी विवेकानंद ने मनुष्य को 'पोटेंशियल गॉड' कहा था, यानि कि 'ईश्वर बनने की संभावना से युक्त प्राणी।' हनुमानजी ने इसे कर दिखाया था। 'सच्ची आध्यात्मिकता है – 'स्व' में स्थित होना, और यह 'स्व' (आत्म–तत्व) कभी विकृत नहीं होता। हनुमानजी हर क्षण इसी भूमिका में दिखाई देते हैं।'

मैं क्या हूँ और मुझे क्या करना है

35. विभीषण लंका के राजा बने। किसके कारण? लक्ष्मण की जान बची। किसके कारण? सीताजी मुक्त हुईं। किसके कारण? भरत ने प्रयाण नहीं किया। किसके कारण? हनुमान के कारण न! तो जो इतने सारे और सबके सब अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यों का कारण रहा हो, यदि वह यह सोच ले कि 'मैं ही गद्दी पर क्यों न बैठ जाऊँ,' तो क्या यह ग़लत होता? कभी नहीं। क़तई नहीं। बल्कि जग–व्यवहार के लिहाज़ से तो यही सबसे सही होता। लेकिन हनुमान ने ऐसा कभी नहीं किया, कहीं नहीं किया। करना तो दूर की बात है, उन्होंने सोचा तक नहीं, और वह भी सपने तक में नहीं। वे जानते थे कि 'मैं क्या हूँ और मुझे क्या करना है।' यही उनकी आध्यात्मिकता थी और यही था उनकी चामत्कारिक शक्ति का रहस्य। हमें इस बात पर भरोसा करना ही चाहिए कि चामत्कारिक शक्तियों का भी अपना यथार्थ होता है। उनका भी अपना बना–बनाया नियम और निश्चित विधान है। यदि हम अपने अंदर और बाहर के सभी तत्वों में एक संतुलित तालमेल बैठा लें, तो वह चमत्कार हमारे साथ भी घट सकता है, जो लगभग हर समय हनुमान के साथ घटता रहता है।

‘‘प्रार्थना करो ऐसे, जैसे सब कुछ ईश्वर पर निर्भर करता है और काम करो ऐसे, जैसे सब कुछ तुम पर निर्भर करता है।’’

36. हनुमानजी जब भी कोई बड़ा काम करने जाते हैं, उनकी स्थिति ‘हृदय राखि कौसलपुर राजा’ वाली होती है। लेकिन जब काम में लग जाते हैं, तब यह कभी नहीं कहते कि ‘श्रीराम जैसा चाहेंगे, वैसा ही होगा।’ वहाँ तो वे यही कहते हुए मालूम पड़ते हैं कि ‘मैं जैसा चाहूँगा, वैसा ही होगा।’ इसीलिए तो हम हनुमान को कहीं भी थका हुआ, परेशाना, गिड़गिड़ाते, रिरियाते या रोते हुए नहीं पाते। वे जानते हैं कि ‘यहाँ सब कुछ मुझ पर निर्भर करता है, केवल मुझ पर। यदि मैं ठीक से खेलूँगा, तो जीत जाऊँगा।’

37. हनुमानजी लंका को जला आए। वे लंका के लोगों को भयानक दहशत में डाल आए, जिनमें महापराक्रमी रावण भी शामिल था। लेकिन अपना नाम कहीं छोड़कर नहीं आए। उन्होंने लंका के बहादुरों से खूब बातचीत की है; यहाँ तक कि रावण से भी, लेकिन उस बातचीत में कभी भी अपना नाम नहीं लिया। तभी तो रावण को उनका नाम मालूम नहीं है। हनुमानजी ने जब भी अपना परिचय दिया ‘‘राम करि दूता’’ के रूप में ही दिया।

38. हनुमानजी के काम के इस तरीक़े में एक बहुत ही गहरी मनोवैज्ञानिक सच्चाई छिपी हुई दिखाई देती है। वह सच्चाई यह है कि उनके लिए उनको सौंपा गया काम ही महत्वपूण है, वही सब कुछ है। वे अपने दायित्व से हटकर कुछ देखते ही नहीं।

संवाद कौशल (Communication Skills)

39. हनुमान जी सीताजी को अक्सर ‘मातु’ कहकर संबोधित करते हैं – ‘मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा,’ या ‘तिन्ह कर भय माता मोहिं नाहीं,’ आदि। यहाँ मैंने जानबूझकर ‘हमेशा’ की जगह ‘अक्सर’ शब्द का प्रयोग किया है, क्योंकि कहीं–कहीं उन्होंने सीताजी के लिए ‘जनकसुता’ एवं ‘जानकी’ शब्द का भी उपयोग किया है। लेकिन यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि इन शब्दों का प्रयोग उन्होंने वहीं किया है, जहाँ वे किसी अन्य से सीताजी के बारे में बात करते हैं। हनुमानजी ऐसे

स्थानों पर 'जानकी' और 'जनकसुता' शब्दों का प्रयोग इसलिए करते हों, ताकि वे अपने दोहरे दायित्व को व्यक्त कर सकें। साथ ही यह भी हो सकता है कि यदि वे दूसरों के सामने सीताजी के लिए 'माता' शब्द का प्रयोग करते, तो लोग इसका अर्थ अंजनि से लगा लेते। इसमें हनुमान जी ने संवाद के कौशल (कम्यूनिकेशन स्किल) का ही परिचय दिया है, न कि सीताजी के प्रति किसी तरह के निरादर भाव का।

विनम्रता

40. उनमें विनम्रता तो है, लेकिन 'अतिशय विनम्रता' नहीं है और यह होनी भी नहीं चाहिए; क्योंकि उससे विनम्रता अपना प्रभाव और यहाँ तक कि अपना स्वरूप तक खो देती है। 'अतिशय विनम्रता' एक तरह से चापलूसी लगने लगती है। यह कहीं न कहीं व्यक्ति की कमज़ोरी को दिखाने वाली बन जाती है। यह ठीक है कि संत बना हुआ साँप लोगों को काटे नहीं, लेकिन उसे फुफकराते तो रहना ही चाहिए, ताकि लोग उससे भयरहित होकर उसे पत्थर मार-मारकर घायल न कर दें। हाँ, यह बात अलग है कि हनुमान का जो क्रोध था, वह क्रोध स्वयं विनम्रता का कारण बनने वाला क्रोध था, विनम्रता के कोमल तंतुओं को नष्ट करने वाला नहीं। इस बारे में हम महान् चित्रकार एवं शिल्पकार माइकल एंजेलो के इस आत्मकथ्य को याद कर सकते हैं कि ''जब भी मुझे क्रोध आता है, मैं छेनी उठाकर अपनी मूर्ति को आकार देने लगता हूँ। पाँच-सात मिनट पत्थर तोड़ लेने के बाद मैं हैरान रह जाता हूँ कि क्रोध न जाने कहाँ चला गया।'' हनुमान का क्रोध भी इसी श्रेणी का एक रचनात्मक क्रोध है, जो उन्हें तत्काल विनम्रता से जोड़ देता है।

सफलता का श्रेय सामुहिक

41. नेतृत्वकर्त्ता का एक प्रमुख गुण यह होता है कि वह सफलता का श्रेय स्वयं न लेकर अपने सहयोगियों को देता है। इसी से उसके सहयोगियों का मनोबल बढ़ता है, और इसी बढ़े हुए मनोबल से भविष्य की सफलता के नए-नए आयाम खुलते हैं। जब अंगद कहते

हैं कि मैं उस समुद्र को पार तो कर जाऊँगा, लेकिन लौटने में संदेह है। दरअसल बात यह है कि हनुमान को भरोसा तो था ही कि मैं सीताजी का पता लगाकर यहीं लोटूँगा। यदि यहाँ मुझे ये मेरे सभी साथी नहीं मले, तो मुझे अकेले ही सुग्रीव के पास जाकर सब बताना पड़ेगा। यहाँ तक कि बिना बताए ही यह स्पष्ट हो जाएगा कि यह काम मैंने अकेले किया है। जबकि सभी सार्थियों के साथ दरबार में जाने पर इसका श्रेय हम सबको मिलेगा। इसलिए उन्होंने सोचा कि इस सामूहिक श्रेय को लेने के लिए एक महीने की तकलीफ़ उठा लेना कोई महंगा सौदा नहीं होगा।

पूर्ण समर्पित कर्म

42. हम सम्पूर्ण ‘‘रामचरितमानस’’ में हनुमानजी को कहीं भी इस आशंका से ग्रसित नहीं देखते कि ‘‘मैं सफल होऊँगा कि नहीं।’’ वे यह बात सोचते ही नहीं। वे केवल यह सोचते हैं कि ‘‘मुझे यह काम करना है।’’ बल्कि इससे भी बड़ा सच तो यह है कि वे यह तक नहीं सोचते पाए गए हैं कि ‘‘मुझे यह काम करना है।’’ वे तो किसी भी काम को, जो उन्हें सौंप दिया गया है, करते हुए ही पाए जाते हैं। उनकी यही प्रणाली उन्हें किसी भी काम के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित बनाकर उस काम में उनकी सम्पूर्ण क्षमता को नियोजित कर देती है। उन्हें तो आदेश मिलता है और बस वे उठते हैं और चल देते हैं उसका पालन करने के लिए। तो क्या हम इसे ही उनके कभी भी असफल न होने का मुख्य कारण मानें? नहीं। ऐसा नहीं है। यहाँ हमें हनुमान जी की भूमिका को देखना होगा। योजना बनाना सेनापति का काम होता है, सैनिक का नहीं। हनुमान सैनिक हैं, सेनापति नहीं। ठीक इसी प्रकार वे ईओ हैं, सीईओ नहीं।

अभिमान से दूर रहो

43. शक्तिमान होते हुए भी उस शक्ति का मान न होना हनुमानजी का सहज स्वभाव है, जो अद्‌भुत है, वंदनीय है। सभा में सबसे आख़िरी में हनुमान आते हैं, और आकर भगवान को प्रणाम करते हैं। जैसा कि हम देख चुके हैं, प्राटोकॉल में वे काफ़ी ऊपर हैं। लेकिन वे 'लो प्रोफ़ाइल' ही रखना पसंद करते हैं। तभी तो वे सबसे बाद में आते हैं और आते ही शीश भी नवाते हैं।

सही सोच (Positive Attitude)

44. रामचरितमानस' में एक प्रसंग है। श्रीराम अपनी सेना के साथ बैठे हुए हैं। रात का समय है और आकाश में चाँद निकल आया है। उस खिले हुए चंद्रमा को देखकर श्रीराम सभी से पूछते हैं कि ''चंद्रमा में यह जो कालापन है, वह क्या है?'' इसका जवाब सब अपनी–अपनी तरह से देते हैं। उन सभी के इन उत्तरों को सभी के मन का एक्स–रे कहा जा सकता है। वानरराज सुग्रीव उत्तर देते हैं कि 'चंद्रमा में पृथ्वी की छाया दिखाई दे रही है।' कोई कहता है 'वह चंद्रमा के ह्रदय का छेद है,' तो कोई कहता है कि 'भाई होने के कारण चंद्र ने विष को अपने ह्रदय में स्थान दे रखा है। वही विष काले धब्बे के रूप में दिखाई देता है।' यानि कि सभी को चंद्रमा के उस काले धब्बे में कालापन नज़र आ रहा है। लेकिन हनुमानजी को? आइए देखते हैं। हनुमान जी कहते हैं प्रभु चंद्रमा आपका दास है इसीलिए आपकी श्यामल छवि अपने ह्रदय में बसाई है यह उसी श्यामता का आभास है।

उपसंहार

45. दोस्तों, ज़रूरत बुद्धि की उतनी नहीं होती, जितनी कि सद्‌बुद्धि की होती है। बुद्धि तो रावण के पास सबसे अधिक थी। लेकिन उसका पतन हुआ। हनुमान के पास रावण जितनी बुद्धि नहीं थी, लेकिन उनका इतना उत्थान हुआ कि वे भगवान बन गए। यह फ़र्क़ केवल बुद्धि की गुणवत्ता के कारण आया।

46. ‘‘हे ईश्वर, मुझमें सेवक की भावना का संचार करके उसे दिन–प्रतिदिन दृढ़ बनाता जा। तू बस इतना कर दे। बाक़ी तो मैं ख़ुद ही कर लूँगा, क्योंकि तूने मुझे वे सारी चीजें दे रखी हैं, जिनसे कुछ भी किया जा सकता है।’’

THINK POSITIVE TRUST

Biyani Girls College

R-4, Sector-3, Vidhyadhar Nagar, Jaipur

S.No.

Photo

MEMBERSHIP FORM

Please register me as TPT member in this institution. I solemnly declare that I shall work as a Disciplined Positive Worker and participate in all the activities of the Think Positive Trust and shall abide by its rules and regulations.

1.	Name of the Member	
2.	Father's Name	
3.	Date of Birth	
4.	Occupation	
5.	Organization	
6.	Contact No.	
7.	E-mail ID	
8.	Permanent Address	
9.	Residential Address with Phone No.	
10.	Details of previous/regular participation in other social activities	

Signature of Chairperson **Signature of Member**

[For further queries please contact Mr. Mohd. Shakil Zai (Coordinator) : +91-9887252716]